ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 259-261**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

जनजाति समाजों पर हिन्दू धर्म का प्रभाव

1. डॉ0 ज्योति गुप्ता
2. सोनी गुप्ता

1. विभागाध्यक्ष 2. शोध अध्येत्री–समाजशास्त्र विभाग, मदनमोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कालांकर, प्रतापगढ़ सम्बद्ध–प्रो0 राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ0प्र0) भारत

Received-16.12.2024, Revised-25.12.2024, Accepted-29.12.2024 **E-mail : hsoni0442@gmail.com**

सारांशः ***भारतीय समाज में सभी वर्गों को समान अधिकार दिया गया है, जिनमें से कुछ वर्गों को विशेष दर्जा दिया गया जनजाति समाजों पर हिन्दू धर्म का प्रभाव विशेष महत्व रखता है हिन्दु धर्म के प्रति अब हर वर्ग धर्म में जागरूकता फैल चुकी है। हिन्दु धर्म को सभी धर्मों में सर्वोपरि माना जाता है क्योंकि इस धर्म में दया, प्रेम, अपनत्व की भावना पायी जाती है।***

जनजाति वर्ग में इसका प्रभाव विशेष देखने को मिलता है। पहले जनजाति त्यौहारों को नहीं मनाते थे और अन्य वर्गों से दूर रहना पसन्द करते थे लेकिन अब ऐसा नहीं है।

कुंजीभूत शब्द– जनजाति समाज, हिन्दू धर्म, समान अधिकार, दया, प्रेम, अपनत्व, सर्वोपरि, शिक्षा, व्यवसाय, जीवन शैली

नगरों के विस्तार के कारण अब जनजाति शिक्षित व व्यवसाय की दिशा में अग्रसर हो रहे हैं। अब जनजातियों की जीवन शैली आधुनिकता से प्रभावित होकर बदल चुकी है, इन्होनें अपने आपको समाज के अनुरूप परिवर्तित कर लिया है। देखा जाये तो पूर्व में जनजाति समाज में शिव की पूजा की जाती थी और प्रकृति को माँ का दर्जा दिया जाता था। वर्तमान में जनजाति के द्वारा दीपावली, होली, रक्षा बंधन, नवरात्रि, दशहरा जैसे त्यौहारों को मनाया जाता है। जनजातियों के विवाह में आस–पास के पड़ोसीयों को भी बुलाया जाता है। यह सब बदलाव हिन्दु धर्म पर पड़ा है। आदि वासियों का अपना भी धर्म है जो वे पहले करते हैं फिर जैसे की प्रकृति पुजन, वन, पर्वत, नदियों, सूर्य आदि को अपना पूर्वज मानना इनकी पूजा करना और आधुनिकता से प्रभावित होने के बाद इन्होंने हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्मों को बनाया है। वर्तमान में जनजातियों द्वारा हर सम्भव प्रयास किया जा रहा है आगे बढ़ने का यह अब किसी भी वर्ण धर्म से अपने को अलग नहीं मानते है।

सरकार द्वारा कम साक्षरता वाले जिलों में अनुसूचित जनजातियों की बालिकाओं के बीच शिक्षा को मजबूत करने की योजना लागू की गयी।

जनजातियों के बीच व्यवसायिक प्रशिक्षण की योजना चलाई जा रही है जिसका उद्देश्य इन्हें स्वरोजगार के लिए कौशल विकसित करना और उनकी आय में वृद्धि करके इनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सके। अनुसूचित जनजाति व जनजातियों के बालक/बालिकाओं को सरकार द्वारा छात्रावास की सुविधाएं भी दी जा रही है।

भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना में भी अब जनजातियों की भागदारी बढ़ती जा रही है सरकार हर प्रयास कर रही है। गरीब बेसहारों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की यह शोध जनजाति समाजों पर हिन्दू धर्म का प्रभाव पर महत्वपूर्ण अन्तदृष्टि प्रदान करता है और आगे भी इनपर ध्यान दिया जायेगा।

इस पेपर में मैं जनजाति समाजों पर हिन्दु धर्म का प्रभाव एवं महत्व का गहराई से अध्ययन करूंगी।

जनजाति समाज का ऐतिहासिक परिपेक्ष– जनजाति समाज प्रारम्भ से ही अति पिछड़ा समाज है यह मूल रूप से जंगलो मे रहना पसंद करते थे इन्हे बाहरी दुनिया से कोई मतलब नही रहता था यह उतना ही श्रम करते थे जितने मे इनका बसेरा हो जाए यह वस्तुओ व धन को भविष्य के लिए बचा कर नही रखते थे इनके उपर जैसी परिस्थिति आती थी यह उस हिसाब से कार्य को करते थे और वर्तमान समय मे भी कुछ स्थानो पर भी देखने को मिलता है जब अपना देश आजाद नही हुआ था उसके पहले से ब्रिटीश सरकार ने जनजातियों को ब्तपउपदंस ज्तपइमे ।बज 1871 के तहत क्रिमिनल जनजाति का इन्हे दर्जा दिया था इसके अनुसार इनके बच्चो को 6 वर्ष के ही आयु से ही इनसे दूर कर दिया जाता था आजादी के बाद ब्रिटीश सरकार का यह ।ब्ज भारत सरकार ने बदल कर गैर–अधिसूचना जनजाति (क्म.छंजपपिमक ज्तपइमे) कर दिया। जनजाति समाज की एक विशेषता यह है कि ये अपने ही समुदाय मे विवाह करना पसन्द करते है देखा जाये तो यह अपना वंशज, पूर्वज तथा देवी देवता, प्रकृति आदि मे विश्वास रखते है और इनकी पूजा भी करते है इन्हे कई नामो से जाना जाता है जैसे–आदिम जाति, वनवासी, प्रागैतिहासिक, असभ्य जाति, आदिवासी, निरक्षक और कबीलाई समूह

अण्डमान निकोबार द्विप समूह मे आज भी इनके वंशज उपस्थित पाये जाते है जनजाति समाज ब्राम्हणो के नीतिशास्त्र को नही मानती थी यह प्राचीन काल मे अपनी आजीविका के लिए प्रकृति पर निर्भर रहते थे यह जीवों का शिकार करते थे और कृषि करते थे यह बहुत दुर्लभ स्थानो पर रहना पसन्द करते थे जैसे पहाड़ियों मे रेगिस्तानो व, जंगलो मे यह आज भी अपनी संस्कृति सभ्यता को बचाये हुए है प्राचीन काल के ग्रन्थो मे आदिवासियो के बारे मे कुछ विशेष सन्दर्भ मिलते है कुछ विद्वानो का यह कहना है कि सिन्धु घाटी सभ्यता के निर्माण मे आदिवासी लोग जरूर रहे होगे

वैदिक काल मे आर्यो का भारत के उत्तर पश्चिम से आना व गैर–आर्यो के विरूद्ध उनका युद्ध देखना उल्लेखनी है उत्तर वैदिक काल मे आर्यो और गैर आर्यो का एकीकरण जारी रहा इस तरह जनजातियों को निम्न श्रेणी के कार्य करने के लिए विवश किया जाने लगा और इस प्रकार निम्नजाति का निर्माण हुआ जिसे शूद्र के नाम से जाना जाने लगा गैर आदिवासीयों ने सांमती काल (400–1000 ई.) मे आदिवासी इलाको पर आक्रमण किया और संस्कृति करण की प्रक्रिया ने आदिवासी समाज को प्रभावित करना आरम्भ कर दिया ब्राम्हणो ने अपने लिए एक अलग वंशावली तैयार की मुगल शासको ने भी जनजाति समाज को परेशान करने मे कोई कसर नही छोड़ी

जनजातियों मे हिन्दु धर्म का प्रभाव मध्यकालीन परिपेक्ष्य– मध्यकालीन इतिहास का काल लगभग 8 वी सताब्दी से 18 वी सताब्दी तक माना जाता है इसमे भक्ति आन्दोलन ने जनजातियों के साथ–साथ सभी वर्गो के लिए धार्मिक क्रिया कलापो को खोल दिया गया था इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत देवी–देवताओ की पूजा को बढ़ावा दिया और जाति व्यवस्था के अन्तर्गत कठोरता को कम किया इसमे जनजातियों के देवी–देवताओ को हिन्दु देवी–देवताओ के रूप मे मान्यता मिली जैसे–जैसे मध्यकालीन राज्यो का विस्तार

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

हुआ उसके साथ–साथ जनजातियों मे आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव बढ़ा इसमे कुछ जनजाति नेताओ ने हिन्दु राजाओ के साथ गठबन्धन जोड़ा और इन्ही रिति–रिवाजो को अपना लिया

यहॉ जनजाति देवी–देवताओ को हिन्दु देवताओ के अवतार के रूप मे माना जाने लगा और यही से ही जनजाति समुदायो ने हिन्दुओ के त्यौहार और तीर्थ यात्राओ मे भाग लेना आरम्भ कर दिया यही से ईसाइ मिशनरियो ने जनजाति समाज पर धर्मांतरण के प्रयास करने शूरू कर दिये थे और यही से धार्मिक विविधता बढ़ी देखा जारा तो 19वी और 20वी शताब्दी मे हिन्दु समाज ने सामाजिक सुधार आन्दोलन मे जनजाति के पुर्नउत्थान के लिए काम किया

जनजातियों व हिन्दु समाज के संस्कृति आदान–प्रदान– हिन्दू समाज और जनजाति सामाजो मे प्राचीन काल से ही संस्कृतियो का आदान–प्रदान होता रहा है हिन्दु र्धम के अन्तर्गत कई जनजाति देवी–देवताओ और धार्मिक प्रथाओ को हिन्दु धर्म ने स्वीकार किया है जबकि जनजाति समाजो ने भी हिन्दुओ के देवी–देवताओ और पुजा पाठो (गनेश) को अपनाया है देखा जाए तो समय के साथ–साथ बहुत से जनजाति हिन्दु धर्म मे सम्हाहित हो गया

बहुत से जनजाति को जाति व्यवस्था मे भी स्थान दिया गया और कुछ जनजातियों ने हिन्दु को स्वीकार व इसमे सम्हाहित होने को अस्वीकार किया और अपने ही संस्कृति सभ्यता को जनजातियों ने इसके मतभेद के कारण संघर्ष भी किया समय के अन्तराल के साथ–साथ जनजाति और हिन्दु त्यौहारो व अनुष्ठानो का मिश्रण हुआ जनजातिय समाजो मे हिन्दु धर्म के प्रभाव से इनके धार्मिक मान्यताओ और प्रथाओ मे बदलाव भी देखने को मिला हिन्दु देवी–देवताओ और जनजाति देवी–देवताओ को एकीकरण भी हुआ।

जनजाति समाज पर हिन्दु धर्म के भाषा, साहित्य कला संस्कृति का भी प्रभाव पड़ा जिससे इनके जीवन शैली मे बदलाव देखने को मिला है। साथ ही साथ इनके खान–पान पैनाहवे ओढ़ावे मे भी बदलाव देखने को मिला जनजातियों मे हिन्दु धर्म का प्रभाव व्यापार और वाणिज्य के माध्यम से भी पड़ा।

जनजाति समाज पर हिन्दु धर्म का आधुनिक परिपेक्ष्य– जनजाति समाज पर हिन्दु धर्म का आधुनिकीय करण ने गहन प्रभाव छोड़ा है आधुनिकीकरण के प्रभाव से जनजाति समाज पर बदलाव देखा गया है जिसके कारण इनका बाहरी दुनिया क साथ सम्पर्क बढ़ा जिससे इनके रिति–रिवाजो और पारम्परिक विश्वासो मे भी बदलाव देखने को मिला शिक्षा और शहरीकरण के सम्पर्क मे आने से इनके पारम्परिक मूल्यो मे कमी आयी है

जनजाति समाज पर हिन्दु धर्म का प्रभाव प्राचीन काल से ही पड़ता चला आ रहा है माना कि इसकी गति थोड़ी धीमी थी परन्तु इस गति को आधुनिकीकरण ने पुनः तेज कर दी है वर्तमान समय मे कई जनजातियों ने हिन्दु धर्म के देवी–देवताओं, पूजा–पाठ कर्मकाण्डो आदि को अपनाया है और बहुतो ने अभी भी अपनी पहचान बनाये रखने के लिए अपने पूर्वजो के कर्मकाण्ड को अपनाये रखा है।

जनजाति समाज की कुछ विशिष्ट गुणो के कारण हिन्दु धर्म ने भी इनके रीति–रिवाजो को आत्मसार करने का प्रयास किया है। कुछ दृष्टि से राजनीतिक और सामाजिक कारण भी जनजाति समुदायों और हिंदु धर्म के बीच सम्बन्धो को प्रभावित करते है सरकार के कुछ प्रमुख नीतियो (आरक्षण) ने अन्य सकारात्मक कार्यवाइयो ने जनजाति समुदाय को सामाजिक और आर्थिक रूप से ऊपर उठाने मे भरसक प्रयास किया है।

आधुनिकीकरण और हिन्दु धर्म के प्रभाव के कारण बहुत सी जनजातिय समुदाय अपनी पहचान को बचाने के लिए संकटो का सामना भी कर रही है ये अपनी पारम्परिक संस्कृति और आधुनिकरण के दुनिया के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष कर रहे है। हिन्दु धर्म का आधुनिक परिपेक्ष्य एक जटिल और गतिशील मुद्दा है आधुनिकीकरण, हिन्दु धर्म का प्रभाव और राजनीतिक सामाजिक कारक इस सम्बन्ध को आकार दे रहा है और जनजाति समुदाय अपनी पहचान और संस्कृति को बनाये रखने के लिए संघर्ष कर रहे।

जनजाति समुदाय और हिन्दु धर्म के आधुनिक प्रभाव पर कुछ विद्वानो का अलग तर्क है कुछ का कहना है कि जनजाति समुदायो को हिन्दु धर्म मे आत्मसार किया जा रहा है जबकि कुछ का कहना है कि ये अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने मे सक्षम है यहॉ कुछ जनजाति हिन्दु धर्म को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग मानते है और अन्य इसे बाहरी संस्कृति के रूप मे देखते है

सरकारी नौकरियो मे जनजाति समाज को विशेष प्रकार से आरक्षण दिया गया है यह इन्हे सामाजिक रूप से उपर उठाने के लिए सरकार का एक महत्वपूर्ण कदम रहा है।

प्रमुख आकड़े–

- भारत मे कुल जनसंख्या का 86 प्रतिशत हिस्सा अनुसूचित जनजातियों का है यह संख्या लगभग 104.2 मिलियन है (जनगणना 2011 के अनुसार)
- भारत मे 710 से अधिक अलग–अलग जनजाति समूह निवास करती है।
- अनुसूचित जनजातिय की साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से कम है।
- जुलाई 2021–2022 के च्स्थै के रिपोर्ट के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता दर लगभग 73.2 प्रतिशत है यह राष्ट्रीय औसत साक्षरता दर से काफी कम है 2011 की जनगणना मे यह आकड़ा 58.97 प्रतिशत था।
- अनुसूचित जनजातियों मे गरीबी का स्तर राष्ट्रीय औसत से अधिक है।
- अनुसूचित जनजाति समूह आबादी का 9.4 प्रतिशत है लेकिन बहुआयामी गरीबी मे रहने वाले लोगो मे इनका हिस्सा अधिक है।
- ग्रामिण क्षेत्रो मे 40.8 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे रहते है शहरी क्षेत्रो मे भी यह आकड़ा लगभग 24.2 प्रतिशत है। (2011–2012 के अनुसार)
- 15–49 वर्ष की आयु के महिलाओ (आदिवासी महिला) मे लगभग 65 प्रतिशत एनिमिया पाया जाता है।
- शिशुओ मे 5 वर्ष से कम आयु वाले बच्चो की मृत्यु दर गैर–आदिवासी आबादी की तुलना मे अधिक है।

निष्कर्ष– जनजातियों पर हिन्दु धर्म का आधुनिक प्रभाव पड़ना एक बहुआयामी और जटिल विषय है जनजाति समाज और हिन्दु धर्म के आपसी सम्बन्ध ऐतिहासिक रूप से जटिल और गतिशील रहे है जहॉ एक तरफ हिन्दु धर्म ने जनजाति समूह पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ा है वही संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के माध्यम से कुछ जनजातियों ने हिन्दु सामाजिक संरचना के ऊपर की और

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

गतिशीलता प्राप्त करने का भी प्रयास किया है और जनजाति समाजो ने भी हिन्दु धर्म को अपनी कला संस्कृति सभ्यता से प्रभावित किया है।

इस शोध पत्र मे पाया गया है कि सभी जनजाति समाज हिन्दु धर्म से समान रूप से प्रभावित नही हुए है कई जनजातियों ने अपनी विशिष्ट पहचान और परम्परा को बचाये रखने के लिए हिन्दु धर्म का प्रतिरोध भी किया है जनजाति समाज को बचाये रखने के लिए हमे कुछ मुख्य पहलुओ पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

- जनजाति समाज के बच्चो के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व विद्यायल का निमार्ण कराया जाए।
- जहॉ भी जनजाति समाज निवास करता हो वहॉ पर सिविरो के माध्यम से इन्हे इनके अधिकारो और सरकारी सुविधाओ का बोध कराया जाए।
- सिविरो के माध्यम से इन्हे स्वास्थ्य सुविधओ का लाभ दिलाया जाए।
- इनके आजीविका के लिए इन्हे उचित रोजगार भी उपलब्ध कराया जाए।
- अक्सर इन्के पारम्पिरिक भूमि से इन्हे वंचित कर दिया जाता है इसके लिए सरकार द्वारा उचित कानून बनाने की आवश्यकता है जिससे यह एक सीन पर रहकर सभी सरकारी सुविधाओ का लाभ ले सके।
- इनके संस्कृति सभ्यता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि हमारा पर्यावरण सुरक्षित रह सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डा0 विजय सोनकर शास्त्री सामाजिक समरसता दर्शन, साहित्य भण्डार, दिल्ली 2019.
2. प्रकाश नारायण नाटाणी भारती संस्कृति के विविध आयाम, अवतार पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2015.
3. सत्यकेतु विद्यालंकार समाजशास्त्र, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली 2011.
4. अग्रवाल, जी0 के0 भारतीय सामाजिक संस्थाये, आगरा बुक स्टोर, आगरा 1987.
5. दुबे, एस0 सी0 'मानव और संस्कृति ' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1982.
6. फोकलोर, वर्ष 1, अकं 3, ब्रिटीश इण्डियन स्ट्रीट कलकत्ता 1986.
7. कपिल एच0 के0 अनुसंधान विधियॉ, अर्चना प्रिन्टर्स आगरा 1984.
8. हिन्दी विश्कोश खण्ड 5 नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण 1965.
9. मजुमदार एवं मदन सामाजिक मानवशास्त्र परिचय' नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1978.
10. श्रीवास्तव, के0 सी0 'प्राचीन भारत का इतिहास यूनाईटेड बुक डिपो, इलाहाबाद 1985.
11. प्रसाद नर्मदेश्वर, जाति व्यवस्था, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1965.
12. भारतीय आदिवासी, हिन्दी समिति उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ 2031 वि0।
13. Verma J.S ' Rural Habitat in Transformation in Basti Distric (U.P) ;A Geographical Anolysis Unpublished Ph.D Thesis, Gorakhpur Vniversity Gorakhpur, 1988-
14. योजना प्रकाश विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली 1–15 दिसम्बर 2003.
15. कुरूक्षेत्र प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली 1982.
16. कादम्बिनी, हिन्दुस्तान प्रकाशन, नई दिल्ली अक्टूबर 2003.
17. दिनमान, टाईम्स आफ इण्डिया प्रकाशन, नई दिल्ली जुलाई 1983.
18. ब्लिट्ज, जून 1984.

*****